आरती

१

ॐ जय जगदीश हरे। प्रभु जय जगदीश हरे॥ टेक॥
भक्त-जनन के संकट क्षण में दूर करे॥

जो ध्यावे फल पावे दुःख मिटे मन का। (प्रभु दुःख···)
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तन का॥ १॥

मातापिता तुम मेरे शरण गहूँ किसकी। (प्रभु शरण···)
तुम बिन और न दूजा, आश करूँ जिसकी॥ २॥

तुम पूर्ण परमात्मा, तुम अन्तरयामी। (प्रभु तुम···)
परब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ३॥

तुम करुणा के सागर, तुम पालन-कर्त्ता। (प्रभु तुम···)
मैं सेवक तुम स्वामी, कृपा करो भर्ता॥ ४॥

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति। (प्रभु सबके···)
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति॥ ५॥

दीनबन्धु दुःख हरता, तुम रक्षक मेरे। (प्रभु तुम···)
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ६॥

विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा। (प्रभु पाप···)
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥ ७॥

२

(जय) अम्बे गौरी मैया ।
(जय) मङ्गल-मूरती मैया ॥ टेक ॥
तुमको निशिदिन ध्यावत
हरि ब्रह्मा शिवजी,
माँग सिंदूर विराजत टीका
टीका मृगमद की ॥ १ ॥

कानन कुण्डल शोभित
नासाग्रे मोती
कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत
राजत सम-ज्योतिः ॥ २ ॥

सिन्दूर की थाली (जय) केशर की प्याली
गुलाब-गेंदा-चम्पा-जूही, लावत भेंट चढ़ावत प्यारी
प्यारी हरियाली ॥३॥

गावत सब जन आरती
श्रीमाता जी को ।
सेवा करके पावत सेवा
गावत प्रेम देवन को ॥ ४ ॥

३

ॐ जय शिव ओम्कारा
ॐ (जय) हर शिव ओम्कारा ॥ टेक ॥
ब्रह्मा-विष्णु-सदाशिव अर्द्धाङ्गी गौरी ॥ १ ॥

एकानन चतुरानन पञ्चानन राजे । (हे शिव पञ्चानन ···)
हंसासन गरुड़ासन वृष-वाहन साजे ॥ २ ॥

दोभुज चतुर्भुज दशभुज ते सोहे । (हे शिव दशभुज ···)
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे ॥ ३ ॥

तक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी । (हे शिव मुण्डमाला ···)
चन्दन-मृगमद शोभे भाले शशधारी ॥ ४ ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अङ्गे । (हे शिव·····)
ब्रह्मादिक सनकादिक प्रेतादिक सङ्गे ॥ ५ ॥

कर में श्रेष्ठ कमण्डल-चक्र-त्रिशूल धरता । (हे शिव·····)
जगकर्त्ता जगहर्त्ता जग-पालन-कर्त्ता ॥ ६ ॥

ब्रह्मा विष्णु-सदाशिव जानत अविवेका । (हे शिव·····)
प्रणवाक्षर के मध्ये तीनों हो एका ॥ ७ ॥

(जय गुण) ये शिवजी की आरती जो कोई गावे ।
कहत शिवानन्द स्वामी मन-वाञ्छित फल पावे ॥ ८ ॥

४

(ताँरे) आरती करे चन्द्र तपन, देव मानव वन्दे चरण,
आसीन सेइ विश्व-शरण, ताँर जगत-मन्दिरे ।
अनादिकाल अनन्त गगन सेइ असीम महिमा मगन,
ताहे तरङ्ग उठे सघन आनन्द-नन्द-नन्द रे ।
हाते लये छय ऋतुर डालि, पाये दैय धरा कुसुम ढालि,
कतोइ वरण, कतोइ गंध, कतो गीति कतो छन्द रे ।
विहग-गीत गगन छाय, जलद गाय, जलधि गाय,
महापवन हरषे धाय, गाहे गिरिकन्दरे ।

कतो कतो शत भक्त प्राण हेरिछे पुलके गाहिछे गान,
पुण्य किरणे फुटिछे प्रेम, टुटिछे मोह-बन्ध रे ॥

५

आनन्दमयी माई प्रेममयी माई
अति अद्भुत मधुरमयी अद्भुत मधुरमयी
आनन्दमयी माई माई।
दयामयी स्नेहमयी कृपामयी करुणामयी
मधुमयी अमृतमयी प्रेममयी शान्तिमयी
चिन्मयी माई माई।
सद्गुरु ज्ञानदा मोक्षदा माई।
सारदा वरदा अन्नदा माई ॥

६

आरती कीजे श्री रघुवर की,
दशरथ-नन्दन सीतावर की।
भक्ति का दीपक प्रेम की बाति,
साधु सन्त करें दिन राति ॥
आरती हनुमत के मन भावे
आरती भक्तन के मन भावे,
रामचन्द्र की—
दशरथ-नन्दन सीतावर की ॥

७

ज्योति से ज्योति ज्वला दो राम
ज्योति से ज्योति जगा दो ॥

श्री गौराङ्ग की मंगल-आरती

८

मङ्गल आरती गौर किशोर।
मङ्गल नित्यानन्द जोड़हि जोड़ ॥
मङ्गल अद्वैत भकतहिं सङ्गे।
मङ्गल गावत प्रेम तरङ्गे ॥
मङ्गल बाजत खोल करताल।
मङ्गल हरिदास नाचत भाल ॥
मङ्गल धूप दीप लइया स्वरूप।
मङ्गल आरती करे अपरूप ॥
मङ्गल गदाधर हेरि पहुँ हास।
मङ्गल गावत दीन कृष्णदास ॥

श्री राधाकृष्ण की मङ्गल-आरती

९

मङ्गल आरती युगल किशोर।
जय जय कहतहिं सखीगण भोर ॥
रतन प्रदीप करे टलमल जोर।
निरखित मुखविधु श्याम सुगौर ॥
ललिता विशाखा आदि प्रेमे आगोर।
करत निरजन दोहे दुहुँ भोर ॥
गावत शुक पिक, नाचत मोर।
चाँद उपेखि मुख निरखे चकोर ॥
विविध यन्त्र बाजत घन घोर।
श्यामानन्द आनन्दे बाजाय जयढोर ॥

श्रीकृष्ण की मङ्गल-आरती

१०

जय जय मङ्गल आरती दुहुँ की।
श्याम गौरी छबि उठत झलकि॥
नवघने यैनो थिर बिजुरी विराजे।
ताहे मणि आभरणे अङ्ग साजे॥
करे लई दीपावली हेम थाली।
आरती करतहिं ललिता आली॥
सबहुँ सखीगण आनन्दे गावे।
कोई करतालि देइ, कोई बजावे॥
कोई कोई सहचरी मनहिं हरिखे।
दुहुँक अङ्ग पर कुसुम बरिखे॥
इह रस कहतहिं बलराम दासे।
दुहुँ रस माधुरी हेरइते आशे॥

श्री गौराङ्ग की दुपहर की भोग-आरती

११

भजो पतित पावन श्रीगौर हरि।
श्रीगौर हरि नवद्वीप-विहारी,
जय जय दीन दयामय हितकारी॥ (जय-जय)
सुनो सुनो शची-सुत, करो अवधान।
भोग मन्दिरे प्रभु करह पयान॥ (जय-जय)
वामेते अद्वैत प्रभु, दक्षिणे निताइ।
मध्य आसने बैसेन चैतन्य गोसाईं॥ (जय-जय)

अद्वैत-घरणीआर शान्तिपुर-नारी।
(आनन्देर आर सीमा नाइ रे)
हुलु हुलु देइ यबे गोरा-मुख हेरि॥ (जय-जय)

चौपट्टी मोहन्त आर द्वादश गोपाल।
छय चक्रवर्ती आर अष्ट कविराज॥ (जय-जय)

शाक शुकुता आदि नाना उपचार।[1]
आनन्दे भोजन करेन शचीर कुमार॥ (जय-जय)

दधि दुग्ध घृत छाना आर लुचि पुरी।
आनन्दे भोजन करेन नदीया विहारी॥ (जय-जय)

भोजन करिया प्रभु कैलो आचमन।
सुवर्ण खड़िकाय कैलो दन्तेर शोधन॥[2]

बसिते आसन दिला रत्न-सिंहासने।
कर्पूर ताम्बूल योगाय प्रिय भक्तजने॥

फुलेर चौआरी घर फुलेर केयारी।
फुलेर रत्न-सिंहासन चँदवा मशारी॥

फुलेर मन्दिरे प्रभु करिला शयन।
गोविन्ददास करे पाद-सम्भाषण॥

फुलेर पापड़ी प्रभुर उड़े पड़े गाय।
तार माझे महाप्रभु सुखे निद्रा याय॥

श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभुर दासेर अनुदास।
सेवा अभिलाष माँगे नरोत्तमदास॥

१—शुकुता = बिना मिर्चे की एक तरकारी।
२—खड़िका = दाँत खोदनी।

श्री गौराङ्ग की सन्ध्या समय की आरती

१२

भालो गोराचाँदेर आरती वाणी। (भालो बाजे)
बाजे संकीर्त्तन मधुर ध्वनि॥
(आमार गौर आगे)
शङ्ख बाजे, घण्टा बाजे, बाजे करताल।
मधुर मृदंग बाजे शुनिते रसाल॥
विविध कुसुम कुले वनि वनमाला।
कतो कोटि चन्द्र जिनि बदन उजाला॥
(रूप झल्मल् झल्मल् झल्मल् झल्मल् करे)
ब्रह्मा आदि देव याँके जोड़ करे।
सहस्र वदने फणी शिरे छत्र धरे॥
शिव, शुक, नारद, व्यास विसारे।
नाहिं परापर भाव भरे॥
श्रीनिवास हरिदास पञ्चम गावे।
गदाधर नरहरि चामर ढुलावे॥
वीर वल्लभदास श्रीगौर चरणे आश।
जग भरि रहल महिमा प्रकाश॥

श्रीकृष्ण की सन्ध्या समय की आरती

१३

हरत सकल सन्ताप जनम की,
मिटत तलब यम काल की।
आरती किये जय जय,
मदन गोपाल की॥

गो-घृत रचित कपूर बाती,
झलकत काञ्चन थार की।
मयूर-मुकुट पीताम्बर शोहे,
उरे शोहे वैजयन्ती माल की।
चरण-कमल पर नूपुर बाजे,
आँजरि कुसुम दुलाल की।
सुन्दर लोल कपोलक छबि सों,
निरखत मदन गोपाल की॥
सुर-नर-मुनिगण करतहिं आरती,
भक्त वत्सल प्रतिपाल की।
हुँहुँ बलि रघुनाथ दास प्रभु,
मोहन गोकुल बाल की॥
आरती किये जय-जय मदनगोपाल की।
(मदन गोपाल की, यशोदा-दुलाल की)
(यशोदा दुलाल की, श्रीनन्दलाल की)
(श्रीनन्दलाल की, गोपालबाल की)
आरती किये जय-जय मदनगोपाल की)

■